

1. टाइप 2 मधुमेह एक आजीवन रोग क्यों बन गया है?

मेडिकल प्रोफेशन (चिकित्सा व्यवसाय) ने टाइप 2 डायबिटीज को एक प्रगतिशील आजीवन बीमारी करार कर दिया है, जिसमें कोई उलट-पुलट या इलाज की उम्मीद ही नहीं है। एलोपैथिक चिकित्सा में दिए जाने वाले उपचारों में बीमारी के कारण पर ध्यान नहीं दिया गया है, जो कि अप्राकृतिक खाद्य पदार्थ और असंतुलित जीवन शैली है। इसके बजाय, ध्यान ज्यादातर दवाओं के माध्यम से रक्त शर्करा (ग्लूकोज) के स्तर को कम करने पर दिया गया है। रोगी को दी जाने वाली एंटीडायबिटिक गोलियों की सूची बढ़ती ही रहती है और प्रत्येक आनेवाले वर्ष अंत में इंसुलिन और अन्य इंजेक्शन के साथ समाप्त होती है। दुर्भाग्यवश मधुमेह रोगी अपने पूरे जीवन के लिए महंगी एंटीडायबिटिक दवाओं पर निर्भर रहते हैं। टाइप 2 डायबिटीज को उलट देना वर्तमान में नया चलन है, जो हाल के वर्षों में तेजी से बढ़ रहा है।

चिकित्सा शास्त्र में सदियों पुरानी कहावत (ज्ञान) है कि:

"दवा में, रोगों की प्रभावी रोकथाम और सक्षम इलाज के लिए हमें बीमारी के कारण को जानना जरूरी है।"

- एविसेना, फ़ारसी चिकित्सक (980-1037)

टाइप 2 मधुमेह के प्रमुख कारण अस्वास्थ्यकर वाणिज्यिक खाद्य पदार्थ और असंतुलित जीवन शैली है। ये दोनों एक साथ शरीर में अधिक ग्लूकोज के निर्माण का कारण बनते हैं। अत्यधिक ग्लूकोज शरीर में ग्लूकोज उपयोग हार्मोन इंसुलिन की मांग को बढ़ाता है। समय के साथ, उच्च इंसुलिन का स्तर इंसुलिन प्रतिरोध नामक एक दुष्क्रिया पैदा करता है। इस इंसुलिन प्रतिरोध से शरीर की कोशिकाएं ग्लूकोज का सही उपयोग नहीं कर पाती हैं। इससे संपूर्ण शरीर में अतिरिक्त ग्लूकोज और वसा का निर्माण होता है। ग्लूकोज और इंसुलिन का निर्माण न बढ़े और टाइप 2 मधुमेह को रोकने और पलट करने का सबसे प्रभावी तरीका भोजन और जीवन शैली को संशोधित करना आवश्यक है।

टाइप 2 मधुमेह के लिए अधिकांश एलोपैथिक दवाएं इंसुलिन के स्तर को बढ़ाकर रक्त शर्करा के स्तर को कम करती हैं। इंसुलिन शरीर से ग्लूकोज को खत्म नहीं करता है, लेकिन शरीर में बांटता है और कुछ अस्वास्थ्यकर वसा के रूप में इसे पुनर्वितरित करता है। समय के साथ, यह अतिरिक्त ग्लूकोज और वसा कोशिकाओं की क्षति का कारण बनता है जो रेटिनोपैथी (नेत्र क्षति), नेफ्रोपैथी (गुर्दे की क्षति), न्यूरोपैथी (तंत्रिका क्षति), हृदय रोग, अंग क्षति जैसी सूची के बद्ध जटिलताओं के लिए उत्तरदायी है और सूची बढ़ती ही जाती है। भारतीय मधुमेह रोगियों में यह समस्या अतिरंजित हो जाती है क्योंकि जो शरीर के बड़े द्रव्यमान वाले सफेद कोकेशियान रोगियों के लिए निर्धारित एंटीडायबिटिक दवाओं की खुराक निर्धारित है वही उनके लिए भी लिखी जाती है। अपेक्षाकृत उच्च दवा की खुराक कम रक्त शर्करा (हाइपोग्लाइसीमिया एपिसोड) के जोखिम को बढ़ाती है, जिसके लिए रोगियों को अक्सर भोजन, शर्करा वाले नाश्ते और पेय पदार्थों के नुस्खे सुनिश्चित किए जाते हैं। इसलिए, दवाई की खुराक ही अपने आप में शरीर पर ग्लूकोज के बोझ को बढ़ाकर रोग को और बदतर कर देता है।